

॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपराद्धं श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये () नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् () नक्षत्र () नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं चतुर्थ-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषंवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शर्व्या या तव तया नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवा गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवृक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाङ्गम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्त्तियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलंविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्वं सहस्राक्षं शतैषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमनां भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलंविकरणाय नमः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

| | | | |
|---------------------|----|--------------------------|----|
| शिवाय नमः | | मृगपाणये नमः | |
| महेश्वराय नमः | | जटाधराय नमः | |
| शम्भवे नमः | | कैलासवासिने नमः | |
| पिनाकिने नमः | | कवचिने नमः | |
| शशिशेखराय नमः | | कठोराय नमः | |
| वामदेवाय नमः | | त्रिपुरान्तकाय नमः | |
| विरूपाक्षाय नमः | | वृषाङ्गाय नमः | |
| कर्पदिने नमः | | वृषभारूढाय नमः | ४० |
| नीललोहिताय नमः | | भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| शङ्कराय नमः | १० | सामप्रियाय नमः | |
| शूलपाणिने नमः | | स्वरमयाय नमः | |
| खट्वाङ्गिने नमः | | त्रयीमूर्तये नमः | |
| विष्णुवल्लभाय नमः | | अनीश्वराय नमः | |
| शिपिविष्टाय नमः | | सर्वज्ञाय नमः | |
| अम्बिकानाथाय नमः | | परमात्मने नमः | |
| श्रीकण्ठाय नमः | | सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| भक्तवत्सलाय नमः | | हविषे नमः | |
| भवाय नमः | | यज्ञमयाय नमः | ५० |
| शर्वाय नमः | | सोमाय नमः | |
| त्रिलोकेशाय नमः | २० | पञ्चवक्त्राय नमः | |
| शितिकण्ठाय नमः | | सदाशिवाय नमः | |
| शिवाप्रियाय नमः | | विश्वेश्वराय नमः | |
| उग्राय नमः | | वीरभद्राय नमः | |
| कपालिने नमः | | गणनाथाय नमः | |
| कामारये नमः | | प्रजापतये नमः | |
| अन्धकासुरसूदनाय नमः | | हिरण्यरेतसे नमः | |
| गङ्गाधराय नमः | | दुर्धर्षाय नमः | |
| ललाटाक्षाय नमः | | गिरीशाय नमः | ६० |
| कालकालाय नमः | | गिरिशाय नमः | |
| कृपानिधये नमः | ३० | अनघाय नमः | |
| भीमाय नमः | | भुजङ्गभूषणाय नमः | |
| परशुहस्ताय नमः | | भर्गाय नमः | |

| | | | |
|-------------------|----|-------------------|-----|
| गिरिधन्वने नमः | | शाश्वताय नमः | |
| गिरिप्रियाय नमः | | खण्डपरशवे नमः | |
| कृत्तिवाससे नमः | | अजाय नमः | |
| पुरारातये नमः | | पाशविमोचकाय नमः | १० |
| भगवते नमः | | मृडाय नमः | |
| प्रमथाधिपाय नमः | ७० | पशुपतये नमः | |
| मृत्युञ्जयाय नमः | | देवाय नमः | |
| सूक्ष्मतनवे नमः | | महादेवाय नमः | |
| जगद्ध्यापिने नमः | | अव्ययाय नमः | |
| जगद्गुरवे नमः | | हरये नमः | |
| व्योमकेशाय नमः | | पूषदन्तभिदे नमः | |
| महासेनजनकाय नमः | | अव्यग्राय नमः | |
| चारुविक्रमाय नमः | | दक्षाध्वरहराय नमः | |
| रुद्राय नमः | | हराय नमः | १०० |
| भूतपतये नमः | | भगनेत्रभिदे नमः | |
| स्थाणवे नमः | ८० | अव्यक्ताय नमः | |
| अहये बुध्याय नमः | | सहस्राक्षाय नमः | |
| दिगम्बराय नमः | | सहस्रपदे नमः | |
| अष्टमूर्तये नमः | | अपवर्गप्रदाय नमः | |
| अनेकात्मने नमः | | अनन्ताय नमः | |
| सात्त्विकाय नमः | | तारकाय नमः | |
| शुद्धविग्रहाय नमः | | परमेश्वराय नमः | |

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्री-शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीदुष्टम् हस्तं बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकांलाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥

रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ चतुर्थ-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

किं न जानासि देवेश त्वयि भक्तिं प्रयच्छ मे।
स्वपादाग्रतले देव दास्यं देहि जगत्पते॥४॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

बद्धोऽहं विविधैः पाशैः संसारभयबन्धनैः।
पतितं मोहजाले मां त्वं समुद्धर शङ्कर॥४॥
यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।